हिंदी (लोकवाणी)

अभ्यास के लिए कृतिपत्रिका 3 के उत्तर

प्र. 1. (अ)

(1)

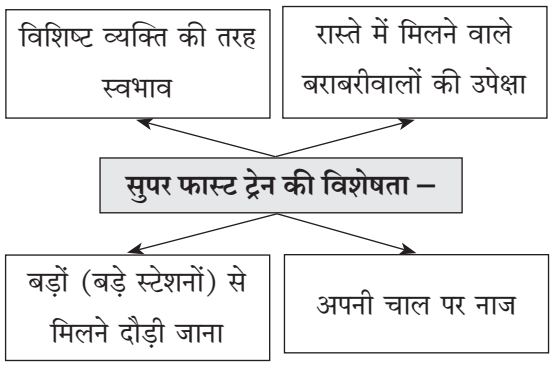

(2) (i) दौड़ना – दौड़ (ii) चलना – चाल
(iii) मिलना – मिलाप (iv) हँसना – हँसी।

(3) रेलगाड़ी की सुविधा हर जगह उपलब्ध नहीं होती। दूर-दराज के इलाकों में बसें ही लोगों की आवाजाही का प्रमुख साधन होती हैं। जहाँ केवल बसें ही दूर-दराज के इलाकों में आने-जाने का साधन होती हैं, वहाँ उनसे होने वाली कठिनाइयों की बात करना कोई मायने नहीं रखता। फिर भी बस-यात्रा ट्रेन-यात्रा के मुकाबले कष्टदायी तो होती ही है। छोटी-छोटी सीटों पर यात्री को सिकुड़कर बैठना होता है। कुछ बसों की सीटों की हालत इतनी दयनीय होती है कि यात्रा की समाप्ति पर यात्री को पीठदर्द के इलाज के लिए सीधे अस्पताल की राह लेनी पड़ती है। भीड़-भरी बस में यात्रा करना भेड़-बकरियों को ढोने वाले टेंपो की याद दिलाने वाला होता है। बस में पैर रखने की भी जगह नहीं होती, फिर भी कंडक्टर आगे आने वाले स्टॉपों पर यात्रियों को बस में भरता जाता है। ऐसी बस में यात्रा कर सुरक्षित गंतव्य स्थान पर पहुँच जाने पर ईश्वर का शुक्रिया अदा करने का मन होता है। दूर-दराज के इलाकों में खस्ताहाल सड़कों पर चलने वाली बसों में यात्रा करने वाले यात्रियों को हिचकोले खाने का अभ्यस्त हो ही जाना पड़ता है।

प्र. 1. (आ)

(1) (i) हर नगर में

(ii) रईसों और अमीरों का

(iii) धोबी का, डाकिए का

(iv) हू-बू-हू उसी तरह का व्यवहार करके

(2) **(i)** (1) गरीब × अमीर
(2) बुरी × अच्छी।

(ii) (1) बहुरूपिया – बहुरूपिये
(2) लोककथाएँ – लोककथा।

(3) बहुरूपियों की विभिन्न रूप धारण कर लोगों को चकित कर देने वाली कला हमारे यहाँ प्राचीन काल से प्रचलित रही है। राजा-महाराजाओं के दरबार में बहुरूपिये तरह-तरह के रूप धारण कर उनका मनोरंजन करते और इनाम पाया करते थे। बाजार-हाट, मेलों तथा रईसों के शादी-ब्याह के समारोहों में भी बहुरूपिये अपनी कला से लोगों का मनोरंजन करते और इनाम लिया करते थे। लोक कलाओं के समारोहों में बहुरूपिये किसी-न-किसी पात्र के भेस में अवश्य दिखाई देते थे। ये साधु, फकीर, भिखारी, जोगी, लँगड़े, अंधे, बहरे का रूप धारण कर ऐसा अभिनय करते थे, लगता था जैसे वे वही हों। बहुरूपियों का अपना समाज हुआ करता था। उनका यह पेशा उनकी आय का साधन हुआ करता था। पर वे अपनी कला के प्रति निष्ठावान हुआ करते थे और उसका नाजायज फायदा नहीं उठाते थे। मनोरंजन के आधुनिक साधनों के सामने आजकल बहुरूपियों की कला का मोल नहीं रह गया है। इसलिए आजकल बहुरूपियों के दर्शन नहीं होते।

प्र. 2. (अ)

(1)

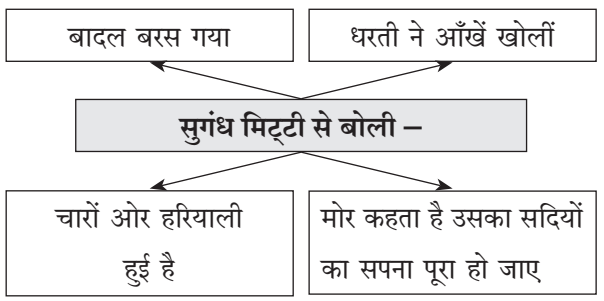

(2) मोर कहता है कि अब वह अकेला नहीं होगा, उसकी पूरी टोली अब यहाँ जुटेगी। वर्षा ऋतु में सोंधी-सोंधी-सी सुगंध मिट्टी से बात कहती है।

वर्षा ऋतु में चारों ओर आनंद का प्रसार हो गया है। वर्षा की फुहारों से बाग-बगीचों में वृक्ष प्रफुल्लित हो गए हैं। तालाब और छोटी-छोटी तलैयाँ पानी से लबालब भरकर प्रसन्न दिखाई दे रही हैं। बगीचे के वृक्ष हवा के झकारों से मस्ती में भरे हुए गुनगुनाते और गाते हुए से लगते हैं।।

प्र. 2. (आ)

(1) (i) गोकुल में, ग्वाला बनकर

(ii) नंद की गायों के बीच, पशु बनकर

(iii) गोवर्धन पर्वत पर, पत्थर बनकर

(iv) यमुना के तट पर कदंब के कुंजों में, पक्षी बनकर।

(2) रसखान कहते हैं कि यदि मैं अगले जन्म में मनुष्य बनूँ तो मुझे गोकुल गाँव के ग्वालों के बीच रहने का अवसर मिले। यदि मैं पशु बनूँ तो उस पर मेरा कोई बस नहीं है। मैं चाहता हूँ कि मैं सदैव नंद बाबा की गायों के मध्य चरूँ।

प्र. 3. (1) (i) अशर्फियों। (ii) बहुरूपिया।

(2) (i) **और :** लड़के <u>और</u> लड़कियाँ खेल रहे हैं। ***अथवा***

(ii) **यहाँ :** <u>यहाँ</u> आपके लिए अच्छा इंतजाम किया गया है।

(3)

संधि शब्द	**संधि-विच्छेद**	**संधि भेद**
उन्नति	**उत् + नति**	**व्यंजन संधि**

अथवा

देवेश	देव + ईश	**स्वर संधि**

(4) (i) आँखें खुल जाना।

वाक्य : कलाकार की कलाकारी देखकर सब की आँखें खुल गईं।

अथवा

(ii) (1) तौलकर बोलना।

अर्थ : सोच-समझकर बोलना।

वाक्य : विपिन जो भी बोलता है, तौलकर बोलता है।

(2) भरा-पूरा अनुभव करना।

अर्थ : संतुष्ट हो जाना।

वाक्य : बोर्ड की परीक्षा का परिणाम देखकर विनोद भरा-पूरा अनुभव कर रहा था।

(5) (i) सामान्य वर्तमानकाल।

(ii) (1) वे पास के कमरे में बैठ रहे हैं।

(2) कहाँ तक चलेंगे।

(6) (i) मिश्र वाक्य।

(ii) सबसे पहले सत्यम्, शिवम्, सुंदरम् का क्रम बदलो।

प्र. 4. (अ) तथा **(आ)**

उपयोजित लेखन की कृतियों के स्व-मूल्यमापन संबंधी

उपयोजित लेखन के प्रश्नों को हल करते हुए विद्यार्थियों को अपने विचार, अपनी भाषा में लिखने होते हैं। ये प्रश्न मुक्तोत्तरी प्रकार के प्रश्न हैं। इनके उत्तर विद्यार्थी स्वयं लिखें।

नमूना कृतिपत्रिका में दिए गए ऐसे प्रश्नों के उत्तर अंक योजना को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थी स्वयं चेक करें और अपने द्वारा लिखे गए उत्तरों को जाँचें। आवश्यकता हो तो विद्यार्थी अपने विषय शिक्षक की सहायता लें।

उपयोजित लेखन के अधिक अभ्यास हेतु '**नवनीत हिंदी (LL) उपयोजित लेखन : कक्षा दसवीं**' में दिए गए उपयोजित लेखन के नमूनों का अध्ययन अवश्य करें।